UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 7.0 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 15, No. 2 Year - 15 February, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

अनुक्रमणिका

❧	प्रेमचंद और दलित–विमर्श **डॉ० एस0बी0एन0 तिवारी**	1-4
❧	Micro Finance as a Financing Tools for Micro Enterprises **Tapas Ranjan Roy**	5-10
❧	भाषा का जैविक व सामाजिक आधार **डॉ0 तस्मीना हुसैन**	11-14
❧	मूल्यों का नवप्रवर्तन : भारत में नैतिक प्रगति में समाचार मीडिया प्रकटीकरण और संचार की भूमिका की खोज **नेहा अनमोल जावळे**	15-17
❧	धनबाद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की रूचि का अध्ययन (सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में) **विजय कुमार राम**	18-20
❧	सृजन के फूल **डॉ0 प्रमोद कुमार पाण्डेय**	21-25
❧	भारत में दिव्यांग व्यक्तियों के संवैधानिक एवं सरकारी योजनाएँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्यामकली**	26-32
❧	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, मोहम्मद आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	33-36
❧	कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सागाजिक वंचना के रतर का विश्लेषणात्मक अध्ययन **महेश चंद जाटव, नितेन्द्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	37-38
❧	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के स्तर का अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 शशि मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	39-41
❧	विद्यालयों में शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का दण्ड के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	42-44
❧	राजस्थान के फड़ चित्रों की लोकप्रियता **स्मिता जायसवाल एवं डॉ0 जया जैन**	45-48
❧	मानवेंद्र नाथ राय की नव मानववाद एवं वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता **विकाश कुमार निराला**	49-52
❧	बुद्ध युग में शिक्षक शिक्षा एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता **डॉ0 राजन कुमार त्रिपाठी**	53-55
❧	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों में मानसिक परिवर्तन एवं सीखने में परिवर्तन का अध्ययन **श्रीमती मुकेशी बाई मीना, श्रीमती पिंकेश मुद्गल एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	56-58

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 15, No. 2, February 2024
Impact Factor : 7.0
ISSN : 0976-6650

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के स्तर का अध्ययन

विष्णु कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
डॉ0 शशि मिश्रा
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)

सारांश

मन में प्रश्न उठता है कि नारी को ही पुरुष के अधीन क्यों जीना पड़ता है क्या इससे अलग विकल्प नहीं है पुरुष प्रधान मानसिकता को बदला जाए विशेषज्ञों के अनुसार पुरुषों की मानसिकता धीरे–धीरे परिवर्तित होगी महिलाओं को भी अपनी कार्यशैली और क्षमताओं से पुरुषों की मानसिकता बदलनी होगी आत्मविश्वास जागृत करना होगा। शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है शोध कार्य हेतु सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को लिया गया है न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने हेतु हिंदी माध्यम के ग्रामीण बालक बालिकाओं को रखा गया है। शोध उपकरण के रूप में प्रमापीकृत उपकरण एल.आई. भूषण द्वारा निर्मित सामाजिक समानता स्तर मापनी का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मानक विचलन का उपयोग किया गया है। नारी समानता के प्रति स्तर परीक्षण में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता उच्च स्तर की पाई गई।

शोध समस्या की प्रस्तावना

बौद्ध काल में स्त्रियों की स्थिति में कुछ सुधार हुआ सामाजिक क्षेत्र में उन्हें सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ यद्यपि उनके आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। राजा राममोहन राय ईश्वर चंद्र विद्यासागर स्वामी विवेकानंद दयानंद सरस्वती महात्मा गांधी ने स्त्रियों के सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकारों के प्रति आवाज उठाई संवैधानिक व्यवस्था यह दावा करती है कि महिला पुरुषों के समकक्ष है सैद्धांतिक रूप से यह सही है परंतु व्यावहारिक रूप में विरोधाभास नजर आता है स्वतंत्रता के बाद भारत के शीर्ष नेताओं ने संविधान में नारी गरिमा को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के समान स्थान देने का प्रावधान किया। परंतु वास्तविक रूप से वर्तमान उन्हे मे निर्णय लेने का अधिकार भी नहीं है।

इससे शोधकर्ता के मन में प्रश्न उठता है कि नारी को ही पुरुष के अधीन क्यों जीना पड़ता है क्या इससे अलग विकल्प नहीं है। पुरुष प्रधान मानसिकता को कैसे बदला जाए विशेषज्ञों के अनुसार पुरुषों की मानसिकता में धीरे–धीरे परिवर्तन होगा इसके लिए पुरुषों की मानसिकता के साथ–साथ महिलाओं को भी अपनी कायशैली योग्यता एवं क्षमता से पुरुष की इस मानसिकता का जवाब देना होगा। आत्मविश्वास जागृत कर आगे आना होगा तथा आत्मविश्वास जागृत करने हेतु आर्थिक रूप से महिलाओं को स्वतंत्र रहना होगा।

प्रस्तुत शोध समस्या का औचित्य

समाधान योग्य समस्या एक प्रश्न होता है जिसका उत्तर एक व्यक्ति की क्षमताओं के आधार पर दे सकता है। प्रत्येक कार्य उद्देश्य पूर्ण होता है और प्रत्येक कार्य अन्य कार्यों का कारण बनता है अर्थात समाज में मानवीय क्रियाकलाप एक दूसरे से जुड़े होते हैं तथा प्रत्येक कार्य को करने की कोई ना कोई आवश्यकता अवश्य होती है। इसी तरह से शैक्षणिक क्षेत्र में भी जब भी कोई अनुसंधान किया जाता है तब वह अनुसंधान स्वयं अनुसंधान के लिए नहीं अपितु शैक्षिक क्षेत्र में जुड़े अन्य व्यक्तियों के लिए भी होता है। अतः प्रत्येक समस्या पर कार्य करने से पूर्व में देखना उचित होता है कि अनुसंधान के परिणाम शैक्षिक जगत एवं उसके व्यवहार के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

शोध समस्या कथन

"सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के स्तर का अध्ययन।"

शोध अध्ययन में प्रयुक्त परिभाषित शब्दों की व्याख्याः

स्वतंत्रता

सोचने की, व्यक्त करने की, पूजा करने की स्वतंत्रता।

समानता

अवसर तथा उन्नति की समानता।

अनुसूचित जाति

समाज का कमजोर एवं उपेक्षित वर्ग।

अभिवृत्ति

एक सामाजिक प्रत्यय एवं मानसिक पहलू है। एक दृष्टिकोण जो किसी विशेष व्यवहार को इंगित करता है।

नारी समानता

संविधान में समानता का अधिकार दिया गया है। स्त्री तथा पुरूषों को एक समान अधिकार प्रदान किये गये है।

शोध समस्या के उद्देश्य

- प्रस्तुत शोध में सामान्य जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के स्तर को ज्ञात करना।
- अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के स्तर को ज्ञात करना।
- सामान्य जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता के प्रति स्तर ज्ञात करना।
- अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता के प्रति स्तर ज्ञात करना।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न परिकल्पना निर्धारित की गई है:–

- सामान्य जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता का स्तर सामान्य होगा।
- अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति स्तर का अध्ययन सामान्य होगा।
- सामान्य जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता के प्रति स्तर का अध्ययन सामान्य होगा।
- अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता के प्रति स्तर का अध्ययन सामान्य होगा।

शोध समस्या के अध्ययन का प्रारूप

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को लिया गया है जनसंख्या में से यादृच्छिक न्याय दर्शन द्वारा न्यादर्श 100 रखा गया है। जिसमें सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को रखा गया है। न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए शाहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम के बालक–बालिकाओं को रखा गया है। शोध उपकरण के रूप में प्रमापीकृत एलआई भूषण द्वारा निर्मित नारी की सामाजिक समानता स्तर मापनी एवं डॉ0 रमा तिवारी द्वारा नारी समानता स्तर मापदंड मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मानक विचलन का उपयोग किया गया।

शोध अध्ययन का सांख्यिकीय विश्लेषण

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के स्तर का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन निकाला गया।

सामान्य जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के स्तर से संबंधित आंकड़े प्रदर्शित करने वाली तालिका

तालिका क्रमांक 1 : सामान्य जाति के विद्यार्थियों का नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति समानता स्तर का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

(N=100)

मध्यमान	मध्यमान का स्तर	प्रमाप विचलन
10.54	औसत स्तर	4.06

सारणी के अनुसार सामान्य जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति नारी समानता के स्तर का मध्यमान 10.54 तथा प्रमाप विचलन 4.06 है यह नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के

औसत स्तर से संबंध रखता है अभिभावक व पति के हस्तक्षेप से स्वतंत्रता सामाजिक निषेध रीति रिवाज व संस्कार से आर्थिक स्वतंत्रता एवं सामाजिक समानता जैसे क्षेत्रो में सामान्य जाति के विद्यार्थियों की नारी के प्रति नारी समानता औसत स्तर की है औसत स्तर से तात्पर्य है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति सामान्य जाति के विद्यार्थी औसत स्तर की नारी समानता रखते हैं

तालिका क्रमांक 2 : अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति समानता स्तर का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

(N=100)

मध्यमान	मध्यमान का स्तर	प्रमाप विचलन
9.36	औसत	4.18

सारणी क्रमांक 2 के अनुसार अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति नारी समानता का मध्यमान 9.36 तथा प्रमाप विचलन 4.18 है नारी की सामाजिक स्वतंत्रता का स्तर औसत पाया गया।

नारी की अभिभावक व पति से स्वतंत्रता, सामाजिक निषेध, रीति रिवाज व संस्कार से आर्थिक स्वतंत्रता एवं सामाजिक समानता के प्रति अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता औसत स्तर की है। औसत स्तर से तात्पर्य है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की समानता स्तर (न ज्यादा स्वतंत्रता और न हीं ज्यादा परतंत्र) औसत पाया गया।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

- नारी समानता के प्रति स्तर परीक्षण में सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थीयो की नारी समानता उच्च स्तर की पाई गई।
- नारी की सामाजिक स्वतंत्रता परीक्षण के प्रति स्तर परीक्षण में सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता उच्च स्तर की पाई गई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. के.एस. कपिल : अनुसंधान परिचय
2. ए.आर. शर्मा : शिक्षा अनुसंधान, आर एल बुक डिपो, मेरठ
3. अग्रवाल तथा विपिन अस्थान : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
4. महेश भार्गव : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन